मारण पयोग कर्ता के लिए कुछ मार्गदर्शन -:

By 💖 Prakash Ji 💖

(पोस्ट लंबे हैं, पर पढ़ें जरूर.... आपके सांसारिक और साधक दोनों जीवन में निश्चित रूप से काम आएगा 🌷🔱🔱🌷🌷🌷🌷🔱🔱□□🌷)

आज थोड़ा हम मारण प्रयोग के ऊपर चर्चा करेंगे और मारण प्रयोग कर्ता को कुछ परामर्श देना चाहेंगे। मनुष्य के सांसारिक मनोकामना की पूर्ति हेतु भगवान शिव ने माता पार्वती को ६ कर्मों के बारे में बताएथे.... स्तंभन, वशिकरण(ईसी के अंदर आकर्षक और मोहन भी आता है),उच्चाटन ,विद्वेषण,मारण, तथा शांति करण। यह 6 कर्म भगवान शिव ने सांसारिक मनुष्यों की कामनाओं की परिपूर्ति के लिए माता पार्वती को सुनाए थे। भगवान

शिव का मूल लक्ष्य यह था कि जनकल्याण हो । और भगवान ने यह भी साफ-साफ कहता की है देवी पार्वती जो इस षट्कर्मका अनुचित प्रयोग करेगा उसका अहित होगा । इन 6 कर्मों में से एक है मारण कर्म ।मारण अपने आप में अद्भुत अद्वितीय अचूक तथा परम घातक होता है । यह तप प्रयोग करना चाहिए जब हाथ में कुछ भी ना बचा हो.... और एक ही मात्र वही विकल्प दिख रहा हो । शास्त्रीय तंत्र से लेकर प्रकृत तंत्र शास्त्र तक सभी में मारण कर्म का वर्णन है । और सभी में भगवान शिव एक ही बात माता पार्वती को समझाए हैं कि हे पार्वती प्राण कंठागत होने के बाद भी मारण प्रयोग मत करना । पर आजकल हम देख रहे हैं इंटरनेट से मिला कुछ पुस्तक की भरोसे में उसमें व्यक्ति अपने आप को इतना शक्तिमान समझ रहा है कि उसके हिसाब से हो किसी के ऊपर भी अब मारण प्रयोग कर सकता है..... । मारण प्रयोग आत्म संयमी व्यक्ति ही कर सकता है..... जो स्वार्थ ना देखकर परमार्थ देखे । आज के व्यक्ति तो फेसबुक में अगर किसी के साथ लड़ाई हो जाता है तो इतने क्रोध में आ जाता है कि..... बोलता है कि अब देख मैं तेरा क्या करता हूं..... मैं तेरे ऊपर यह प्रयोग कर दूंगा मैं तेरे ऊपर हो प्रयोग कर दूंगा आदी आदी..... , और तो कुछ लोग होते हैं जो अपना व्यक्तिगत शत्रु को मारण कर्म के द्वारा मारना चाहते हैं, कोई अपने पड़ोसी को मारना चाहता है मारण कर्म के द्वारा,मैं कहना चाहूंगा यह मूर्खता है...... बिना योग्य व्यक्ति पहले मारण तत्व को प्राप्त ही नहीं कर सकता..... और छोटी-मोटी बात के लिए मारण धर्मा व्यक्ति कभी मारण का प्रयोग नहीं करता है । मारण कर्म करने वाला व्यक्ति का अपना ही एक दुनिया होता है । मारण कर्म से संबंधित उसका अपने ही एक इष्ट देवता होता है । और छोटी-मोटी बात के लिए या फिर स्वयं के लिए व्यक्ति कभी भी किसी के ऊपर मारण का प्रयोग नहीं करता है..... व्यक्ति तब जाकर मारण का प्रयोग करता है जब अपने राष्ट्र के ऊपर कोई विपत्ति छा जाए, अपने राज्य के लिए कोई विपत्ति छा जाए, अपने नगर के लिए कोई विपत्ति छा जाए, अपने गांव के लिए कोई विपत्ति छा जाए, और यह विपत्ति कोई एक व्यक्ति भी हो सकता है कोई दो व्यक्ति भी हो सकते हैं कोई 10 व्यक्ति भी हो सकते हैं कोई हजार व्यक्ति भी हो सकते हैं। वृद्ध शिशु बालक, असहाय के ऊपर घातक प्रहार, मातृशक्ति का सम्मान हानी तथा शरणागत की रक्षा करना ऐसा स्थिति में जब और कोई विकल्प न बचे तब एक मारण कर्ता मारण तंत्र का प्रयोग करता है । जो भी मारण कर्म में जाना चाहते हैं या फिर अभी जा चुके हैं ऐसे व्यक्ति को चाहिए कि हो अपने हाथों से एक मिट्टी का पुतला बनाएं और उस पुतले में स्वयं का प्राण प्रतिष्ठा करके उसे रक्त वस्त्र की

आवरण में ढंक दे.... तथा पवित्र गंगा नदी में जाकर संपूर्ण श्रद्धा वापसी माता गंगा का पूजन पूर्वक यह कहीं की है माता गंगा में अपने आप को प्रतिमा में प्रतिष्ठित करके तेरी पवित्र जलराशि में इसे विसर्जित करता हूं। ऐसे व्यक्ति को चाहिए कि हो अपना घर परिवार छोड़कर किसी निकांचन जगह पर रहना शुरू कर दें..... क्योंकि अगर ऐसे व्यक्ति के द्वारा कभी भी कोई एक भी गलत प्रयोग हो जाता है और हो व्यक्ति अपने परिवार के साथ है तो वह व्यक्ति को यह बात पता नहीं अनजाने में ही सही उसका 14 पीढ़ी उस दोष में दोषी होते हैं..... और आगे चलकर बंश भी निर्मूल हो सकता है। ऐसे व्यक्ति को चाहे कि वह स्वयं का नारायण बलि करा दे, स्वयं का श्राद्ध पिंडदान आदिकरवा दे... जीते जी।

ऐसे व्यक्ति को चाहिए कि वह किसी उग्र देवता का कवच को कम से कम 10000 बार पाठ करके सिद्ध कर ले। ऐसा व्यक्ति को चाहिए कि वह सदा सर्वदा नीले रंग की कपड़े अथवा काले रंग के कपड़े को ही धारण करें। ऐसे व्यक्ति को चाहिए कि वह सदा जनमानस से दूरी बनाकर रहे। अगर सही में कोई व्यक्ति मारण कर्म में संपूर्ण रूप से आ चुका है तो अगर हो किसी पौधे को छूएगा तो वह पौधे चार से पांच दिन के अंदर सुख कर मर जाएगा। कुछ मारण प्रयोग ऐसा होता है कि जिसका निवारण आराम से किया जा सकता है...... और कुछ मारण प्रयोग ऐसा होता है की जो असाध्या होता है.... उसको उसको अगर एक बार प्रयोग कर दिया जाए तो और लौटा नहीं जा सकता.... अगर कोई लौटा दे तो उसकी मृत्यु निश्चित रूप से डेढ़ महीने के अंदर या 1 साल के अंदर या 6 महीने के अंदर हो जाता है। व्यक्ति अगर मारण कर्म का उपयोग जनकल्याण के लिए करें सही उपयोग के लिए करें तो जिस प्रकार ग्रह मंडल में शनि क्रूर ग्रह होने के बाद भी सर्वत्र पूजित हो रहे हैं उसी भांति वह भी सर्वत्र पूजित होगा। ऐसे व्यक्ति अगर विद्या का दुरुपयोग करता है तो मृत्यु के पश्चात भूत प्रेत पिशाच बनकर कालांतर तक रहने के बाद..... स्मसान में मांस हड्डी खाने वाला स्वान होकर जन्म लाभ करता है। और अगर कोई अपने पूरे जीवन काल में इस विद्या का सही उपयोग करता है वह मृत्यु के पश्चात अपने इष्ट देवता का प्रतिनिधि अथवा भैरव के रूप में कालांतर तक अपनी इच्छा मुताबिक पूजित होता है और अंत में अपने इष्ट देवता की लोक को प्राप्त हो जाता है। जो भी मारण कर्म में हैं या फिर जाना चाहते हैं..... हो इस बातों को जरूर ध्यान में रखकर ही आगे बढ़ें......(मारण कर्म से संबंधित और भी बहुत सारी विज्ञान है और भी बहुत सारी बातें हैं जिनको पोस्ट के जरिए नहीं समझाया जा सकता.....)